Major semester-1 2025-2029 DATE - 07/02/2026

The Psychodynamic approach to psychology

मनोविश्लेषणात्मक मनोविज्ञान - जगत में विशिष्ट एवं अनूठी है। मनोविश्लेषण ने समकालीन मनोविज्ञान के एक सम्प्रदाय स्कूल के रूप में मनोविश्लेषण का उपयोग किया गया है। मनोविश्लेषण का विशिष्ट स्थान रहा है। मानसिक रोगों के उपचार की विधि के रूप में भी मनोविश्लेषण का उपयोग किया गया है। व्यक्तित्व के एक सिद्धांत के रूप में मनोविश्लेषण का विशेष महत्व है।

1988 में मनोविश्लेषण को मनोविज्ञान के एक पद्धति के रूप में विकसित किया है। जो मानसिक विकारों के समस्या उपचार करने तथा विकास से संबंधित है रहा। मनोविश्लेषण की पद्धति के व्यक्तित्व सिद्धांत पर आध्यात्मिक सिद्धियों की एक विधि के रूप में ईजाद किया है। जिसमें सिगमंड फ्रायड अचेतन सामग्री के जीवन में भूमि का प्रभाव करता है। मनोविश्लेषणवाद में चेतन की अपेक्षा अचेतन एवं अवचेतन को विशेष महत्व दिया जाता, फ्रायड के अनुसार यदि व्यक्ति का व्यक्तित्व पानी में डाला जाए तो कुछ भाग सतह (1/10 भाग) ही बाहर दिखाई देता है। अधिकांश भाग पानी के अन्दर अदृश्य होता है। पूर्णमन छोटा भाग चेतना तथा बड़ा भाग अचेतन के तुल्य होता है। फ्रायड ने मानव मन के स्तर के संबंध में भिन्न प्रस्तुत किया जो स्वरूप हैं - (1) चेतना के तीन स्तर -

फ्रायड के सिद्धांत में स्थलाकृतिक पहलुओं के जरिये एवं परिभाषाओं पर तथा उनके माध्यम व्यक्ति की जाने वाली प्रतिक्रिया पर विचार किया जाता है। — मानव मन चेतना के तीन स्तरों के रूप में देखता है। प्रथम स्तर चेतना है। जिसके अन्तर्गत वे चिन्तन भावनाएँ और क्रियाएँ आती हैं जिनके प्रति लोग जागरूक रहते हैं। प्रथम स्तर, पूर्वचेतना है। जिसके अन्तर्गत मानसिक क्रियाएँ आती हैं जिनके प्रति लोग तभी जागरूक होते हैं। जब वे उन पर सावधानीपूर्वक ध्यान केंद्रित करते हैं।

चेतना का तीसरा स्तर अचेतन है। जिसके अन्तर्गत ऐसी मानसिक क्रियाएँ आती हैं। जिनके प्रति लोग जागरूक नहीं होते हैं।

(ii) व्यक्तित्व की संरचना:- फ्रायड द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त के अनुसार व्यक्तित्व के प्राथमिक संरचनात्मक तत्व तीन हैं। इड, अहं, पराहं ये तत्व अचेतन में ऊर्जा के रूप में होते हैं और इनके बारे में लोगों द्वारा किए गए व्यवहार के तरीकों से अनुमान लगाया जा सकता है। इड व्यक्ति की मूलप्रवृत्तिक ऊर्जा का स्रोत होता है, इसका संबंध व्यक्ति की आदिम आवश्यकताओं, कामेच्छाओं और आक्रामक आवेगों की तात्कालिक तुष्टि से होता है। अहं का विकास इड से होता है और यह व्यक्ति की मूलप्रवृत्तिक आवश्यकताओं की संतुष्टि वास्तविकता के धरातल पर करता है। इड, अहं और पराहं मौलिक संरचनाओं के रूप में नहीं बल्कि प्रक्रियाओं के रूप में होते हैं। पराहं को समझने का और इसकी विशेषता बताने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि इसको मानसिक प्रकार्यों की नैतिक शाखा के रूप में जाना जाए, पराहं इड और अहं को बताता है कि किसी विशिष्ट अवसर पर इच्छा विशेष की संतुष्टि नैतिक है अथवा नहीं।

(iii) व्यक्तित्व विकास की अवस्थाएँ:- फ्रायड का यह दावा है कि व्यक्तित्व के आंतरिक पक्ष आरम्भ में ही स्थापित हो जाते हैं।

(a) मौखिक अवस्था:- एक नवजात शिशु की मूल-प्रवृत्तियाँ मुख पर केन्द्रित होती हैं।

(b) गुदीय अवस्था:- इस अवस्था की प्रवृत्ति आंत्र यह होती है। कि-बालक उत्सर्जन एवं मलत्याग जैसी शारीरिक प्रकार्यों की खोज करते।

(c) लैंगिक अवस्था:-

(d) कामप्रसुप्ति अवस्था:-

(e) जननांगीय अवस्था:-

07/02/2026